https://artorbit.in/
Art Orbit - Volume 01, No 03, SEP 2025 PP 83-86 (Total PP 04)
ISSN : 3107- 670X (Online)
Frequency – Monthly

ADORNMENT AND SYMBOLISM IN THE SCENIC PAINTING OF RAJASTHAN

(राजस्थान के दृश्य चित्रण में अलंकारिकता एवं प्रतीकात्मकता)

Rajesh Kumar Sharma[a]* **Dr. Niharika Rathore**[b]

[a] *Research Scholar, MDS University, Ajmer*

[b] *Research Supervisor, MDS University, Ajmer*

[a]*Email:* rkumar9667816830@gmail.com

Abstract

This research paper presents a study of adornment and symbolism in the tradition of scenic painting in Rajasthan. Before understanding the nature of scenic painting in post-independence Rajasthan, it is essential to understand the importance of Rajasthan's ancient scenic painting tradition, which forms the basis of our modern scenic painting style. Indian art tradition has a rich history of painting, and Rajasthani painting is an important link in this tradition. It reflects not only beauty but also religious, cultural, and political symbols. The research paper studies styles like Mewar, Marwar, Bundi-Kota, Kishangarh, Bikaner, and Shekhawati to show how artists did not merely make scenic painting a decorative tradition but gave importance to life and culture in their scenic paintings. On this basis, post-independence Rajasthani scenic painters have realized this in their painting aesthetics. This study clarifies that adornment gives beauty and attraction to paintings, while symbolism provides them with depth and meaning.

प्रस्तुत शोध पत्र राजस्थान की दृश्य चित्रण परंपरा में अलंकारिकता एवं प्रतीकात्मकता का अध्ययन प्रस्तुत करता है । राजस्थान के स्वतंत्रतातोर दृश्य चित्रण के स्वरूप को समझने से पूर्व राजस्थान की प्राचीन दृश्य चित्रण परंपरा के महत्व को समझना आवश्यक है जो हमारी आधुनिक दृश्य चित्रण शैली का आधार है ।भारतीय कला परंपरा में चित्रकला का एक समृद्ध इतिहास रहा है, और राजस्थान की चित्रकला इस परंपरा की महत्वपूर्ण कड़ी है। इसमें केवल सौंदर्य ही नहीं, बल्कि धार्मिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक प्रतीक भी परिलक्षित होते हैं। शोध पत्र में मेवाड़, मारवाड़, बूंदी-कोटा, किशनगढ़, बीकानेर और शेखावाटी जैसी शैलियों का अध्ययन कर यह दिखाया गया है कि किस प्रकार कलाकारों ने दृश्य चित्रण को मात्र सजावटी परंपरा न बनाकर जीवन और संस्कृति के महत्व को दृश्य चित्रों में स्थान दिया है। इसी आधार पर राजस्थान के स्वतंत्रतात्तौर दृश्य चित्रकारों ने अपने चित्रण सौंदर्य में इसे साकार किया है इस अध्ययन से स्पष्ट होता है कि अलंकारिकता चित्रों को सौंदर्य और आकर्षण देती है, जबकि प्रतीकात्मकता उन्हें गहराई और अर्थ प्रदान करती है।

Keywords: Rajasthani Painting, Adornment, Symbolism, Scenic Depiction, Indian Art Tradition

राजस्थानी चित्रकला, अलंकारिकता, प्रतीकात्मकता, दृश्य चित्रण, भारतीय कला परंपरा

---

* Corresponding author.

भारतीय कला परंपरा में चित्रकला का एक लंबा और समृद्ध इतिहास रहा है। गुफा-चित्रों से लेकर मध्यकालीन भित्ति चित्रों और लघु चित्रों तक, कला ने हमेशा समाज, संस्कृति और धार्मिक धारणाओं को अभिव्यक्त करने का कार्य किया है। राजस्थान की चित्रकला इस परंपरा की एक विशेष कड़ी है, जिसमें सौंदर्य, भावनात्मकता, प्रतीकात्मकता और अलंकारिकता का अद्वितीय संगम दिखाई देता है।

राजस्थान की भौगोलिक स्थिति, शुष्क जलवायु, शौर्य-गाथाओं से भरा इतिहास, राजदरबारों का वैभव, और भक्ति आंदोलन का सांस्कृतिक प्रभाव—इन सभी ने यहाँ की चित्रकला को विशिष्ट स्वरूप प्रदान किया। विशेषकर दृश्य चित्रण (scenic depiction) में कलाकारों ने न केवल सौंदर्यबोध प्रस्तुत किया, बल्कि गहरे धार्मिक-आध्यात्मिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक प्रतीकों को भी उकेरा।

इस शोध पत्र का उद्देश्य ही कि राजस्थान के दृश्य चित्रण में निहित अलंकारिकता और प्रतीकात्मकता का अध्ययन करना। इसमें विभिन्न राजस्थानी शैलियों (जैसे मेवाड़, मारवाड़, बूंदी, कोटा, किशनगढ़, बीकानेर, नागौर और शेखावाटी) के उदाहरणों द्वारा यह दिखाया जाएगा कि किस प्रकार कलाकारों ने दृश्य चित्रण को केवल सजावटी परंपरा न बनाकर जीवन, संस्कृति और आध्यात्मिकता का दर्पण बना दिया।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

राजस्थान की चित्रकला की जड़ें प्राचीन भारतीय कला परंपरा से जुड़ी हुई हैं। अजंता की गुफाओं से प्राप्त भित्ति चित्र यह प्रमाणित करते हैं कि चित्रण केवल सौंदर्य के लिए नहीं था, बल्कि धार्मिक और सांस्कृतिक प्रसंगों को भी दृश्य रूप में अभिव्यक्त करने का माध्यम था।

राजस्थान में प्रारंभिक दौर में जैन पांडुलिपि चित्रण (12वीं–15वीं शताब्दी) देखने को मिलता है। इन चित्रों में सूक्ष्म रेखांकन, गाढ़े रंगों का प्रयोग, तथा धार्मिक प्रतीकों का अंकन प्रमुख था। इसके बाद पाल शैली और अपभ्रंश शैली का प्रभाव भी राजस्थान की कला में देखा गया।

16वीं शताब्दी में मुग़ल सत्ता के प्रभाव से राजस्थान की राजदरबार संस्कृति और चित्रकला पर भी असर पड़ा। हालांकि मुग़ल चित्रकला अधिक यथार्थवादी (realistic) और दरबारी जीवन पर केंद्रित थी, जबकि राजस्थान की लघु चित्रकला और दृश्य चित्रण अधिक भावनात्मक, प्रतीकात्मक और अलंकारिक रहे ।

राजस्थानी चित्रकला की प्रमुख शैलियाँ

राजस्थान की चित्रकला को सामान्यतः कई क्षेत्रीय शैलियों में विभाजित किया जाता है। प्रत्येक शैली अपने-अपने भौगोलिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक परिवेश के अनुसार विशेषताओं से युक्त है।

17वीं–18वीं शताब्दी में राजस्थान की प्रमुख शैलियाँ विकसित हुईं –

- मेवाड़ शैली – धार्मिक विषय, कृष्ण भक्ति और राम कथाओ का अंकन आलंकारिक और प्रतीकात्मकता के साथ गहरे रंगों में प्रकृति का दृश्यात्मक स्वरूप उजागर किया।

मारवाड शैली - दृश्य चित्रों मे दरबारी जीवन और युद्ध दृश्य का का विशेष रूप से स्थान दिया।

- बूंदी-कोटा शैली – प्रकृति, वर्षा, नायक-नायिका और श्रृंगार प्रसंग के आधार पर दृश्य चित्रण किया गया।

- किशनगढ़ शैली – राजस्थान की महत्वपूर्ण चित्रण शैली जो भक्ति और सौंदर्य का अनोखा संगम हैं , विशेषकर "बानी-ठनी" और चं दनी रात मे संगोष्ठी जैसे चित्रों मे प्रमुखता से देखी जा सकती हैं।

- बीकानेर शैली – सूक्ष्मता और नाजुक रेखांकन के साथ मुगल कला बर्कियो को अपने दृश्य सौंदर्य मे सजाये हुए हैं।

- शेखावाटी भित्ति चित्र – सामाजिक और ऐतिहासिक प्रसंग का महलो और प्राचीन हवेलियों पर चित्रांकन कला की परकाष्टा को समर्पित हैं। इन सभी शैलियों में अलंकारिकता और प्रतीकात्मकता को गहराई से स्थान दिया गया। उदाहरण स्वरूप, कमल को शुद्धता और भक्ति का प्रतीक, मोर को सौंदर्य और प्रेम का प्रतीक, तथा हाथी-घोड़े को सत्ता और शक्ति के प्रतीक के रूप में दर्शाया गया।

दृश्य चित्रण में अलंकारिकता

1. राजस्थान की चित्रकला केवल यथार्थ का प्रतिबिंब नहीं है, बल्कि इसे सुंदर बनाने और भावनाओं को गहराई से व्यक्त करने के लिए कलाकारों ने अलंकारिकता का व्यापक उपयोग किया।
2. सूक्ष्म रेखांकन भारतीय और राजस्थानी कलाकारों की चित्रण शैली की प्रमुख विशेषता रही है नायक नायिका के रूप सौंदर्य का अंकन चित्रकार ने अलंकारिक ढंग से किया है साथ ही प्रकृति की सुंदर चट्टन और बारीकियां का अंकन भी कलाकार ने सूक्ष्मता के साथ किया।
3. चित्रकार द्वारा लाल, हरे ,नीले, पीले और सुनहरे रंगों का प्रयोग अलंकारिक को प्रस्तुत करने के लिए किया।
4. राजस्थानी वेशभूषा और गहनों का अलंकरण भी देखते ही मन को मोह लेता है।
5. प्रकृति के अलंकरण में सुंदर पेड़ पौधों पशु पक्षियों और नदियों का सजावटी प्रयोग चित्रण मे किया।
6. राजस्थानी कलाकार द्वारा पृष्ठभूमि में दृश्य चित्रण के रूप में महल किले उद्यान और सरोवरों का आंगन अलंकारिक ढंग से किया।

दृश्य चित्रण मे प्रतिकात्मकता

1. राजस्थान की चित्रकला में कलाकार ने अलंकारीकता के साथ-साथ गहरे प्रतीकात्मक अर्थो का भी समावेश किया।
2. धार्मिक और सांस्कृतिक रूप मे कमल को शुद्धता का ,गाय को धर्म का व मोर को सौंदर्य के प्रतिक के रूप मे चित्रित किया हैं।
3. प्रकृति में चांदनी का आंगन सौंदर्य के लिए वह सूर्य उदय का अंकन आशा के रूप में, ऋतुओं का अंकन नायक नायिका के प्रेम , वियोग व मिलन के प्रतिक रूप में हुआ है।
4. तत्कालीन समय की राजनीति और राजसत्ता के प्रतीक स्वरूप दरबार, हाथी, घोड़े, व सुंदर शोभा यात्राओं का अंकन कलाकार द्वारा किया।
5. राजनीतिक सत्ता के साथ-साथ भक्ति आंदोलन और पौराणिक कथाओं का भी अंकन कलाकार ने अपने चित्रण में किया जिसमें कृष्ण कथाएं, कृष्ण की बाल लीला रामायण में महाभारत के साथ-साथ भगवत गीता व अन्य धार्मिक ग्रंथो का अंकन किया गया, इन सभी चित्रों में सुंदर

प्रतीकात्मकता का समावेश किया।

राजस्थान की दृश्य चित्रण परंपरा को अधिक गहराई से समझने के लिए उनकी तुलना उसे समय की भारतीय कला की अन्य प्रमुख शैलियों से की जा सकती है। मुगल चित्रकला का स्वरूप यथार्थवादी, दरबारी , व्यक्ति चित्रण व काल्पनिक कथाओं से पारित हो रहा है। जबकि राजस्थानी चित्रण परंपरा में क्षेत्र विशेष के आधार पर प्रकृति का सुंदर अंकन प्रेम व वियोग की भावात्मकता के साथ अलंकारिक और प्रतीकात्मक चित्रण हुआ। पहाड़ी चित्र परंपरा में कोमल और मृदुल रंग योजना के साथ-साथ पहाड़ी क्षेत्र की झलक दिखाई देती है जबकि राजस्थानी चित्र अधिक सजावटी और प्रतीकात्मक गाड़े रंगों के से युक्त है। जैन पांडुलिपि शैली अपनी प्रारंभिक प्रेरणा जबकि राजस्थानी चित्रण शैली अपनी लौकिक और भक्ति प्रधान छवि को प्रस्तुत करते हुए चित्रित की गई।

निष्कर्ष

राजस्थान की दृश्य चित्रण परंपरा भारतीय कला इतिहास का एक महत्वपूर्ण अध्याय है। इसमें केवल चित्र सौंदर्य ही नहीं, बल्कि सांस्कृतिक मूल्यों, धार्मिक धारणाओं, सामाजिक परिवेश और राजनीतिक सत्ता का भी दार्शनिक प्रतिबिंब मिलता है। अलंकारिकता ने चित्रों को सौंदर्य और आकर्षण प्रदान किया, जबकि प्रतीकात्मकता ने गहराई और अर्थवत्ता दी। इस परंपरा ने न केवल स्थानीय संस्कृति को सहेजा, बल्कि सार्वभौमिक भावनाओं को भी दृश्य रूप दिया।

संदर्भ सूची (APA शैली)

1. Agrawala, V. S. (1960). Indian Art. Varanasi: Prithvi Prakashan.
2. Archer, W. G. (1959). Indian Painting in Bundi and Kota. London: Faber and Faber.
3. Beach, M. C. (1992). The Imperial Image: Paintings for the Mughal Court. Washington: Freer Gallery of Art.
4. Brown, P. (1960). Indian Paintings. Oxford University Press.
5. Coomaraswamy, A. K. (1956). Rajput Painting. New Delhi: Munshiram Manoharlal.
6. Dehejia, V. (1999). Indian Art. London: Phaidon Press.
7. Goetz, H. (1950). The Art and Architecture of Bikaner State. Oxford: Clarendon Press.
8. Khandalavala, K. (1986). Pahari and Rajasthani Miniatures. New Delhi: National Museum.
9. Mathur, V. S. (1988). Miniatures of Rajasthan. Jaipur: Publication Scheme.
10. Randhawa, M. S. (1980). Rajasthani Painters. New Delhi: Abhinav Publications.
11. Sharma, R. C. (1995). Rajasthani Miniature Painting. National Museum, New Delhi.
12. Sharma, R. C. (2002). Rajasthani Miniatures: The Collection of the National Museum. New Delhi: National Museum Institute.